

**DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST
TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR
PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-1 ,UNIT-10,
THINKING AND REASONING:TYPES OF
REALISTIC THINKING
LECTURE-73**

यथार्थवादी चिन्तन के प्रकार

(TYPES OF REALISTIC THINKING)

यथार्थवादी चिन्तन को तीन भागों में बाँटा गया है –

(I)अभिसारी चिन्तन (CONVERGENT THINKING)

(II)सर्जनात्मक चिन्तन (CREATIVE THINKING)

(III)आलोचनात्मक चिन्तन (EVALUATING THINKING)

इन तीनों तरह के चिन्तन का विवरण निम्नांकित है –

(I) **अभिसारी चिन्तन** – इस तरह के चिन्तन को निगमनात्मक चिन्तन (DEDUCTIVE THINKING) भी कहा जाता है। अभिसारी चिन्तन में व्यक्ति दिये गये तथ्यों के आधार पर किसी सही निष्कर्ष पर पहुँचने की कोशिश करता है ।

उदाहरणार्थ ,यदि आप से पूछा जाय कि 5 में 2 से गुणा करने पर क्या उत्तर आयेगा तो इसके उत्तर देने में निहित चिन्तन अभिसारी चिन्तन का उदाहरण होगा ।स्पष्ट है कि इस तरह के चिन्तन में व्यक्ति अपनी जिन्दगी के भिन्न –भिन्न क्षेत्रों में प्राप्त अनुभवों को एक साथ मिलाकर उसके आधार पर एक समाधान खोजता है ।

(II) **सर्जनात्मक चिन्तन** – इस तरह के चिन्तन को आगमनात्मक चिन्तन (INDUCTIVE THINKING) कहा जाता है ।इस तरह के चिन्तन में व्यक्ति दिये गये तथ्यों में अपनी ओर से नया तथ्य जोड़कर एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचता है ।जबतक व्यक्ति इन नये तथ्यों को अपनी ओर से उसमें नहीं जोड़ता है ,अर्थात् इन तथ्यों का सर्जन नहीं करता है ,समस्या का समाधान नहीं हो पाता है।

उदाहरणार्थ ,यदि किसी व्यक्ति से 'कलम' का असाधारण उपयोग बतलाने को कहा जाय तो वह व्यक्ति चिन्तन करके अपनी ओर से कुछ असाधारण बात कलम के उपयोग के बारे में बतलायेगा |इस तरह के चिन्तन को सर्जनात्मक चिन्तन कहा जाता है | 'कलम' का साधारण उपयोग तो लिखने में होता है अब इसका असाधारण उपयोग क्या हो सकता है ? सोचिए |इसी तरह का चिन्तन सर्जनात्मक चिन्तन कहलाता है |

(III) **आलोचनात्मक चिन्तन** -इस तरह के चिन्तन में व्यक्ति किसी वस्तु ,घटना या तथ्य की सच्चाई को स्वीकार करने के पहले उसके गुण दोष की परख कर लेता है |हमारे समाज में कुछ व्यक्ति तो ऐसे होते हैं जिन्हें किसी घटना या वस्तु के बारे में जो कुछ भी कहा जाता है ,उसे वे सही समझकर मान लेते हैं| तब ऐसा कहा जाता है कि इस तरह के व्यक्ति में आलोचनात्मक चिन्तन की शक्ति कम है |दूसरी तरफ कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जिन्हें कुछ घटना या वस्तु के बारे में कहने पर उसका गुण - दोष परखते हैं और तब उसे सही या गलत मानते हैं | व्यक्ति में इस तरह के चिन्तन को आलोचनात्मक चिन्तन कहा जाता है |

इस तरह हम देखते हैं कि मनोवैज्ञानिकों ने चिन्तन के कई प्रकार बतलाये हैं | इन विभिन्न प्रकारों में अभिसारी चिन्तन तथा सर्जनात्मक चिन्तन के अध्ययन पर मनोवैज्ञानिकों ने अधिक बल डाला है |